गांधी जी की स्वराज की अवधारणा की समीक्षा तथा इसकी वर्तमान प्रासंगिकता

Sunil Dutt
Deptt.of Sociology
Campus, Badshahithaul Tehri

Vipin Uniyal
Deptt. Of History S.R.T.
S.R.T. Campus, Badshahithaul Tehri

स्वराज शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है– स्व और राज जिसका अर्थ है स्वयं पर अपने द्वारा संचालित शासन। स्वराज की आधुनिक अवधारणा का विकास भारत में पुर्नजागरण और धर्म सुधार आन्दोलन के साथ शुरू होता है। महात्मा गांधी ने भारत की स्वतन्त्रता के लिए यह शब्द प्रचालित किया था, स्वराज मूलतः इस शब्द का प्रयोग लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने किया था, और कहा था, ''स्वराज मेंरा जन्म सिद्ध अधिकार है, और मै इसे लेकर रहुंगा।'' गांधी जी ने स्वराज शब्द की अंतर्निहित धारणा को व्यापक रूप दिया। और उसकी व्याख्या की जो लोगों के दिल और दिमाग में उतर गई। स्वराज का शाब्दिक अर्थ है, अपने उपर नियन्त्रण दूसरे शब्दों में आत्म नियन्त्रण। इस दृष्टि से स्वराज में एक आध्यात्मिक और नैतिक भावना का समावेश हो जाता है। महात्मा गांधी की स्वराज विषयक कल्पना उदान्त थी। वह उनके एक अन्य प्रिय शब्द रामराज्य का पर्याय था। वह उनके सपनों का भारत था। अपने सपनों के भारत का चित्र खींचते हुए, उन्होंने लिखा था, स्वराज में राजा से लेकर एक तक का एक भी अंग अतिकसित रहे, ऐसा नहीं होना चाहिए। उसमें कोई किसी का शत्रु न हो सब अपना काम करें कोई निरक्षर न रहें उतरातर सबके ज्ञान में वृद्धि होती जाये सारी प्रजा को कम से कम बीमारियां हो कोई भी दरिद्र न हो परिश्रम करने वाले को बराबर काम मिलता रहें उसमें जुआ चोंरी मद्यापान और व्यभिचार न हो वर्ग विग्रह न हो धनिक अपने धन का विवेकपूर्ण उपयोग करें यह नहीं होना चाहिए की मुट्ठी भर धनिक मीनकारी के महलों में रहे और हजारों लोग हवा और प्रकाश रहित कोठरियों में।

1909 में गांधी जी द्वारा लिखित ''हिन्दू स्वराज'' उनके आदर्शों की सभ्यता का स्वराज है। यह प्लेटो की रिपब्लिक, थामस मूर की यूटोपिया या राहुल सांस्कृत्यायन की 'बाईसती' सदी की तरह दार्शनिक या साहित्यिक कल्पना नहीं है। हां इसे कुछ हद तक मार्क्स–एजेल्स प्रणीत साम्यवाद के घोषणा पत्र की भांति एक वैकल्पिक सभ्यता का घोषणा पत्र कह सकते है। गांधी जी केवल विचारक नहीं थे, वे ''हिन्द स्वराज'' के लिए मार्क्स और लेनिन भी थे। वे इसके द्वारा उस स्वराज की तस्वीर खड़ी करना चाहते थे, जिससे भारत के भविष्य की पुर्नरचना होती और संस्कृति आत्मबल पा सकती है। हिन्द स्वराज द्वेषधर्म की जगह प्रेम धर्म सिखाती है, हिंसा की जगह आत्मबल को स्थापित करती है। और पशुबल के खिलाप टक्कर लेने के लिए आत्म बल को खड़ा करती है। वे जानते थे, कि ''अभी हिन्दुस्तान उसके लिए तैयार नहीं है। और हिन्दू स्वराज की अवधारणाओं का अवतरण भी इतना आसान नहीं है, किन्तु गांधी का हिन्दु स्वराज कोई बुद्धि विलास नहीं बल्कि उनकी आध्यात्मिकता साधना एवं जीवन के संकल्प की अभिव्यक्ति थी।

भारत के लिए स्वराज ''सांस्कृतिक–अर्थ गर्भित शब्द है। ''दुर्भाग्य से इसका अर्थ आज केवल विदेशी दासता से मुक्ति पाना माना जाने लगा। तिलक महारज के स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। मंत्र का यही अर्थ मान लिया गया है। इसीलिए गांधी के लिए यह अपेक्षित था, कि वह स्वराज की भारतीय अवधारणों को स्पष्ट करें। प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था थी। ऐतरेय ब्राहमण का मंत्र है ''पृथिव्यें समुद्र पर्यन्ता या एक राष्ट्र'' अथर्ववेद के प्रख्यात पृथ्वी सूक्त में भी इसी वैश्विक राष्ट्रीयता का स्तर सुनाई पड़ता है।''माता भूतिः

पुत्रोहं पृथ्विया'' भारत का नाम तक नहीं लिया गया है। स्वराज का व्यक्तिगत अर्थ जहां ''आत्म राज्य'' है, वहीं इसका सामाजिक अर्थ है। जहां संकीर्णता का भाव नहीं है, और जहां सर्व सम्मति से शासन संचालित होता है, ऋग्वेद ने स्वराज शब्द की यही व्यापक वैश्विक भावना है। ''वसुधैव कुटुम्बकुम'' इसकी गायत्री और ''सर्वोदय तीर्थमिंद तवैद'' इसकी साधना है, इसीलिए जिसे हम वैदिक राष्ट्रगीत कहते है। उसमें भी राष्ट्र की संकीर्ण सीमाओं का बंधन नहीं है। स्वराज को गांधी जी केवल प्रचीन सांस्कृतिक विरासत के रूप में ही नहीं अपितु आधुनिक कांतिकारी परिप्रेक्ष्य में व्याख्यायित करते हुए इसके राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक नैतिक आयामों को उजागर किया। स्वराज से गांधी जी का अभिप्राय ''लोक सम्मति से होने वाला शासन'' भारत वर्ष का शासन यहां की प्रजा की प्रकृतिक के अनुरूप होना चाहिए, जिसे उन्होने ''रामराज्य'' कहा जिसका अर्थ है, शुद्ध नैतिक सत्ता के आधार पर स्थापित जनता की सार्वभौम सत्ता'' इसके लिए अनवरत प्रयत्न एवं सतत् जागृत अपेक्षित है। स्वराज का अर्थ सरकारी नियन्त्रण से मुक्त होने के लिए लगातार प्रयत्न करना, चाहे वह नियन्त्रण विदेशी सरकार का हो या स्वदेशी सरकार का। गांधी का स्वराज तो हमारी सभ्यता की आत्मा को अक्षुण्ण रखना है। जहां बहुसंख्यक जनता नीति भ्रष्ट हो या स्वार्थी हो, वहां उसकी सरकार अराजकता की स्थिति पैदा कर सकती है। दूसरा कुछ नहीं गांधी के सपनों के स्वराज में ''जाति या धर्म के भेदों का कोई स्थान नहीं हो सकता। उस पर शिक्षित वर्गों या धनवानों का एकाधिपत्य नहीं हो सकता। वह स्वराज सबके लिए होगा। सबकी गिनती में किसान तो आते ही है। किन्तु लूले लंगड़े, अंधे और भूख से मरने वाले लाखों करोड़ों मेहनतकश मजदूर भी अवश्यक आते है। वे पुनः कहते है। कि 'मेरे सपनों का स्वराज तो गरीबों का स्वराज ऐसी स्थिति है, जिसमें गूंगे बोलने लगते है। और लंगड़े चलते है। स्वराज का अर्थ है। विदेशी नियन्त्रण से पूरी मुक्ति और पूर्ण आर्थिक स्वतत्रता। एक छोर पर नैतिक और सामाजिक उद्देश्य और दूसरे छोर पर है, धर्म इसे हम स्वराज का चतुर्भुज कह सकते है। यदि इसका एक कोण भी विषम हुआ, तो उसका रूप विकृत हो जायेगा। असल में गांधी जी का स्वराज जाति वर्गविहीन समाज का चित्र है। सारे काम एक से ही है। और सारे काम मजदूरी भी एक सी ही है। यहां अनियंत्रित आत्मीयता विहीन प्रतिस्पर्धा की जगह सेवा तथा सत्रों की शिक्षा, संस्कृति के विकास के लिए काफी अवसर रहेगा। ऐसी खींची गयी कोई लकीर युक्लिड की शास्त्रीय व्याख्या की लकीर की तुलना में अधूरी रहेगी उसी प्रकार तात्विक सिद्धान्त की अपेक्षा व्यावहारिक अमल करेंगे। उसी हद तक हमें पूर्ण स्वतन्त्रता भी पूर्णतया प्राप्त होगी—महात्मा गांधी।

किसी ने स्वराज को ''पूर्ण स्वाधीनता किसी ने औपनिवेशिक स्वराज'' किसी ने इसे एक ''राजनीतिक शासन तंत्र'' किसी ने इसे एक ''धार्मिक राज्य'' किसी ने विश्वसंघ आदि समझा चितरंजन दास ने तो आध्यात्मिक दृष्टि से इसकी व्याख्या करते हुए, स्वराज को आत्मा की मुक्ति कहा। गांधी के लिए स्वराज का सीधा अर्थ है, आत्म संयम'' या ''आत्म आत्मराज'' इसीलिए उन्होने स्वराज को मोक्ष का पर्यायवाची भी कहा। गांधी जी के सपनों का स्वराज किसी जाति, सम्प्रदाय धर्म का बन्धन नहीं मानता इसमें सम्पत्तिवानों का एकाधिकार नहीं। स्वराज तो सबके लिए है। किन्तु विशेषकर जो दुखी, बीमार, अंधे भूखे मेहनतकश लोग है। गांधी के लिए स्वराज जनता का राज्य एवं सत्य एवं इंसाफ का राज्य है। अतः स्वराज्य का प्रारम्भ आत्मसंयम एवं आत्मवृद्धि से होता है। गांधी जी केवल भारत को अंग्रेजी दासता से ही नहीं अन्य सभी दासताओं से मुक्त कराना चाहते थे। वे नागनाथ की जगह सांपनाथ का शासन नहीं चाहते थे। इसीलिए स्वराज आन्दोलन आत्मसंयम एवं आत्मवृद्धि का आन्दोलन है।

गांधी जी की स्वराज की अवधारणा की वर्तमान प्रासंगिकता–

स्वराज विशुद्ध रूप से एक राजनीतिक अवधारणा है। लेकिन गांधी जी ने इसमें सत्य, अंहिसा जैसे नैतिक आदर्शों को शामिल कर इसे एक उच्च स्थान प्रदान किया और स्वराज के सन्दर्भ को बहुत व्यापक दृष्टिकोण से देखा। आज नगर हम भारतीय लोकतंत्र में देखे तो हमें राजनीतिक रूप से तो स्वराज प्राप्त हो गया लेकिन भारत में व्याप्त हिंसा, गरीबी, भ्रष्टाचार आदि अनेक समस्याओं को दूर न करने के करण हमें पूर्ण स्वराज की प्राप्ति नहीं हो पायी है। हम वर्तमान समय में गांधी जी के सत्य, अंहिसा, प्रेम जैसे उच्च आदर्शो को भुला बैठे है। तथा भौतिकवादी संस्कृति को आत्मसात कर रहे है। जो कि क्षणिक सुखवाद पर आधारित है। इसका परिणाम यह है। कि वर्तमान लोकतान्त्रिक व्यवस्था में निरन्तर आपराधिक तथा अमानवीय घटनायें बढ़ती ही जा रही है। अगर हमें वर्तमान व्यवस्था को सही करना है। तो हमें गांधी जी के स्वराज में शामिल सत्य अंहिसा नैतिकता आदि तत्वों का इसमें समावेश करना होगा।

गांधी जी के स्वराज की अवधारणा का यह विचार आज भी प्रासंगिक है। कि राज्य को किसी धर्म विषय के प्रति लगाव न रखकर सभी धर्मों को समान आदर भाव की दृष्टि से देखना चाहिए तथा राज्य में सभी धर्मों को समाज आश्रय मिलना चाहिए गांधी जी के स्वराज की अवधारणा का यह विचार वर्तमान समय में भी लागू होता है। तथा भारत अपने संविधान के द्वारा स्वयं को प्रतिनिधित्व का मौका देना चाहते थे। जो प्रभावशाली तथा चरित्रवान हो और जिन पर जनता विश्वास करती हो, जिससे जनता को उन पर गर्व महसूस हो यह विचार वर्तमान भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के सन्दर्भ में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय स्वराज की यह अवधारणा अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है। कि जन प्रतिनिधियों को प्रभावशाली और चत्रिवान होना चाहिए। प्रशासन की वे बीच की कड़ी को होता है। जो मंत्री तथा जनता को आपस में जोड़ता है। इस बात को समझते हुए गांधी जी स्वराज में बुद्धिमान तथा पश्चिमी लोगों का प्रशासन चाहते थे। जो कि वर्तमान समय में पूरी तरह सही है। भारत में वर्तमान समय में प्रशासनिक भ्रष्टाचार एक बहुत बड़ी समस्या का रूप धारण कर चुका है। जिसके कारण भारत का तीव्र गति से विकास नहीं हो पा रहा है। गांधी जी के स्वराज में शारीरिक श्रम अनिवार्य था। उनके अनुसार शारीरिक श्रम न केवल शारीरिक विकास के लिए आवश्यक है, अपितु पूर्ण मानसिक विकास के लिए आवश्यक है। वर्तमान भारतीय समाज में बढ़ने के पश्चात संस्कृति के प्रभाव के कारण लोग श्रम का तिरस्कार करने लगे है। तथा श्रम करना अपमान समझ रहे है। इससे हमारी बुनियादी आवश्यकताएं यथा स्वच्छता, जल पर्यावरण, कृषि आदि प्रभावित हो रहे है। तथा हमें अपने छोटे–छोटे कार्यों के लिए भी सरकार की ओर देखना पड़ रहा है। इससे न केवल सरकार धन का दुरूपयोग बढ़ रहा अपितु सरकार की एक बड़ी कार्यक्षमता भी इस पर नष्ट हो रही है। इस स्थिति को सुधारने के लिए हमें गांधी जी की स्वराज की अवधारणा से हमें प्रेरणा लेनी होगी तथा हमें शारीरिक श्रम को महत्व देना होगा। जिससे हम यह कार्य स्वयं कर सकें।

गांधी जी स्वराज में ऐसी शिक्षा व्यवस्था की कल्पना करते है। जिससे बालक के अर्न्तमन में छुपी शक्तियां प्रदर्शित हो सकें। वे बालकों को शिक्षा के द्वारा कर्तव्य परायण तथा श्रम प्रेमी बनाना चाहते है। गांधी जी स्वराज में न केवल सहित्यिक शिक्षा देना चाहते है। गांधी जी का यह विचार वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में सुधार के लिए रामबाण साबित हो सकता है। क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक बेरोजगारी अधिक पायी जाती है। जो कि तकनीकी ज्ञान का देनी चाहिए, जिससे वह स्वयं का व्यवसाय कर सकें हालांकि वर्तमान समय में व्यावसायिक शिक्षा का तेजी से प्रसार हुआ, लेकिन अधिक महंगी होने के कारण निम्न वर्ग यह प्राप्त नहीं हो पायी है। इसके अतिरिक्त केवल व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करनें तथा उसी पर जोर देने के कारण विद्यार्थी नैतिकता तथा अपने कर्तव्यों को भूल रहे है। जो आगे चलकर अनैतिकता को

जन्म दे रही है। अतः हमें गांधी जी की स्वराज की शिक्षा से प्रेरणा लेकर साहित्यिक तथा व्यावसायिक शिक्षा का समावेश करना होगा।

निष्कर्ष–

गांधी जी की स्वराज की अवधारणा अपने पूर्ववर्ती विचारकों से अधिक व्यापक और सम्पूर्णता लिये हुये है। जहां तिलक के स्वराज का अर्थ सिर्फ इतना था, कि शासन संचालन की भगडोर अंग्रेजों के हाथों से निकलकर भारतीयों के हाथ में आये और वे स्वयं अपने शासन संचालन करें, तिलक ने सिर्फ राजनीतिक स्वराज का सपना देखा था। पर गांधी जी की स्वराज की अवधारणा अत्यन्त व्यापक थी। गांधी जी के स्वराज का अर्थ केवल राजनीतिक स्तर पर विदेश शासन से स्वाधीनता प्राप्त करना नहीं था। बल्कि इसमें सांस्कृतिक व नैतिक स्वधीनता का विचार भी निहित था। यह राष्ट्र निर्माण में परस्पर सहयोग की भावना पर बल देता है। शासन के स्तर पर यह सच्चे लोकतंत्र का पर्याय है। गांधी जी का स्वराज गरीब व्यक्तियों का स्वराज है। यह दीन हीन के उद्धार के लिए प्रेरित करता है। यह आत्म संयम, ग्राम राज्य व सत्ता के विकेन्द्रीकरण पर बल देता है। गांधी जी ने सर्वोदय

अर्थात सब के कल्याण का समर्थन किया है। इस स्वराज को प्राप्त करने के लिए गांधी जी सलाह देते है। अंहिसात्मक समाज गांधी जी की दृष्टि में आदर्श समाज व्यवस्था है। गांधी जी के स्वराज में राज्य विहीन समाज की कल्पना की गयी है। जहां लोग इतने नैतिक होंगें कि दण्ड या बल प्रयोग की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। गांधी जी हिंसा पर आधारित वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करना चाहते थें। जो व्यक्ति की सहमति पर आधारित हो, जिसका उद्देश्य सिर्फ जन कल्याण हो, यही उनकी स्वराज की अवधारणा थी।

सन्दर्भ सूची

(1) सक्सेना, रमेश– गांधी एक अध्ययन, विश्व भारतीय, पब्लिकेशन, नई दिल्ली–110002।
(2) गांधी, महात्मा– सत्य के प्रयोग, विश्व बुक्स प्रकाशन।
(3) गांधी, महात्मा– मेरे सपनों का भारत, तुलसी साहित्य पब्लिकेशन।
(4) सिंह, उपेन्द्र– भारतीय राजनीतिक विचारक, ग्रन्थ विकास पब्लिकेशन।
(5) गुप्त विश्व प्रकाश– गुप्त मोहनी, महात्मा गांधी व्यक्ति और विचारक, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
(6) गांधी, महात्मा– हिन्द स्वराज, शिक्षा भारती प्रकाशन 2005।
(7) सिंह रामजी– गांधी दृष्टि, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस।